शिवशक्ति सरस्वती माँ

18. मम्मा सदा कहा करती थीं, सदा सबको सुख दिया करो। पाँच तत्वों को भी दु:ख नहीं देना। अगर कोई ज़ोर-ज़ोर से चप्पल से आवाज़ करते हुए चलता है तो मम्मा कहती थीं कि धीमे-धीमे चला करो, धरती को भी कष्ट नहीं देना। तत्वों को भी तुम सुख दो ताकि ये तत्व भी तुम्हें सुख दें। जिस प्रकार, एक माँ अपनी बच्ची को हर बात समझाती है कि कैसे बात करें, कैसे चलें, कैसे व्यवहार करें, वैसे मम्मा भी हर तरह की शिक्षा देकर हम बच्चों को योग्य बनाती थीं। जब भी मैं मम्मा को देखती थी तब मम्मा मुझे सजी-सजायी, ताजधारी शक्ति के रूप में दिखायी पड़ती थीं।

19. बाबा, मम्मा को बेटी के रूप में देखते थे, तो माँ के रूप में भी देखते थे। बाबा ने उनको हमेशा यज्ञमाता का ही सम्मान दिया। कभी बाबा, मम्मा को कहते थे, ''मम्मा आप तो यज्ञमाता हैं, जगत् माता हैं, बच्चों को याद-प्यार दो।'' तो मम्मा बाबा के कहने अनुसार याद-प्यार देती थीं। बाबा भी मम्मा को बहुत इज्ज़त देते थे और वैसे व्यवहार भी करते थे। इस प्रकार, बाबा, मम्मा को बेटी के रूप से आज्ञा भी करते थे और यज्ञमाता के रूप से अथाह सम्मान भी देते थे।

20. मम्मा को देखते ही सामने वालों को दीदार व अनुभव होते थे, क्यों? मम्मा की गहन तपस्या और उनकी धारणा ही थी जो देखने वालों को दीदार हो जाते थे, बाबा का साक्षात्कार हो जाता था। मम्मा के सामने कैसा भी कठोर विरोधी व्यक्ति झुक जाता था। किसने झुकाया ? मम्मा के आदर्श, धारणायुक्त, तपस्वी जीवन और बाबा के प्रति उनकी अगाध समर्पण भावना ने।

21. मम्मा को देखते ही उनका शक्तिरूप, तेजस्वी रूप और मातृ-प्यार खींचता था। वो पवित्रता की मूर्त थीं। धीर, गंभीर तथा बाबा के हर क़दम का अनुसरण करने वाली शेरनी शक्ति महसूस होती थीं। भक्तिमार्ग में हम दुर्गास्तुति पढ़ते थे तथा नवरात्रि में नौ दिन व्रत रखते थे। मम्मा हमेशा मुझे दुर्गा रूप में दिखायी देती थीं। वह हमेशा हमारे में शक्ति भरती थीं। मम्मा कन्याओं में शक्ति भरती और कहती थीं कि शिव बाबा का नाम बाला करने वाली शक्तियाँ, सेवाधारी बनो।

22. मम्मा के व्यक्तिगत पुरुषार्थ के बारे में एक बात अति महत्त्वपूर्ण है कि मम्मा को एकान्तवास बहुत प्रिय लगता था। वह रोज़ 2 बजे उठकर बहुत प्यार से बाबा को एकान्त में याद करती थीं। मम्मा की याद इतनी प्यार भरी रहती थी कि उनकी आँखों से प्रेम के मोती निकलते थे। मम्मा चाँदनी रातों में बैठकर रात भर तपस्या करती थीं।